सामाजिक स्तरीकरण
(Social Stratification)

सामाजिक स्तरीकरण वृहद समाजशास्त्र के हृदय का प्रमुख अंग माना जाता है। इस विषय की इतनी अधिक महत्ता स्वाभाविक है, क्योंकि स्तरण के अध्ययन के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानता का तुलनात्मक तथा वैज्ञानिक अध्ययन संभव है। विश्व में ऐसा कोई भी समाज नहीं है, जहां सभी लोग लगभग समान है और न ही किसी समाज में सभी सदस्यों को आगे बढ़ने के समान अवसर मिल पाते हैं। इस व्याप्त असमानता के कारण समाज में अक्सर तनाव और विरोध देखने को मिलता है।

प्राचीनकाल से लेकर आज तक भारत में जितनी विषमताएं रही है, उतनी विषमताएँ शायद ही किसी अन्य देश में देखने को मिलती है। प्रजातांत्रिक एवं साम्यवादी मूल्यों की स्थापना के बावजूद आज भी भारत में काफी विषमताएं देखने को मिल रही है। हजारों लाखों लोग ऐसे है जिनके घरों में कुत्तों को भरपूर दूध या मांस खाने को मिल जाता है। दूसरी तरफ आज उसी देश में ऐसे लाखों गरीब घर और बेसहारा लोग है जिन्हे प्यास बुझाने के लिए स्वच्छ पानी तक नहीं मिल पाता है।

सामाजिक स्तरण समाज में मौजूद असमानता का एक पहलू है। सभी समाजो में सामाजिक व्यवस्थाओं से उत्पन्न असमानताएं मौजूद रहती है। प्रत्येक समाज